श्रीमान् सम्पादक महोदय !

कृपया निम्नलिखित प्रेस-विज्ञप्ति को अपने लोकप्रिय समाचार पत्र में प्रमुखता से स्थान देकर अनुगृहीत करें।

–धन्यवाद

सादर प्रकाशनार्थ

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् : एलाचार्य प्रज्ञसागर मुनिराज

रविवार, 14 अक्तूबर, 12, नई दिल्ली, अध्यात्म साधना केन्द्र। जैन डॉक्टर्स फेडरेशन दिल्ली द्वारा आयोजित **8वीं ऑल इण्डिया जैन डॉक्टर्स कान्फ्रेंस** के पुनीत अवसर पर "Science with Spirituality for Global Peace & Harmony" कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के परमशिष्य परमपूज्य एलाचार्यश्री **प्रज्ञसागरजी मुनिराज** ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा– करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान आदिनाथ ने साधक व श्रावक को धर्मध्यान करने के लिए सर्वप्रथम शरीर विज्ञान का ज्ञान दिया था, उन्होंने कहा–

''धर्मसाधनमाद्यं हि शरीरमिहदेहिनाम्।
तस्य धारणमाधेयं यथाशक्ति च शासने ॥''–(आचार्य जिनसेन, हरिवंशपुराण, 18/143)

इस मनुष्य पर्याय में शरीर ही प्राणियों का सबसे पहला धर्म का साधन है, इसलिए यथाशक्ति उसकी रक्षा करनी चाहिए। यह जैनशासन (आगम) का विधान है।

8-9वीं शताब्दी में आचार्य पूज्यपाद ने मन-वचन-काय के स्वस्थ होने के लिए तीन प्रकार के ग्रन्थ लिखे। मन स्वस्थ होने के लिए **समाधितंत्र**, वचन शुद्ध होने के लिए **जिनेन्द्रव्याकरण** तथा काय शुद्ध होने के लिए **कल्याणकारक**। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने कल्याणकारक ग्रन्थ में एक महत्त्वपूर्ण बात लिखी है जो साधक अपने आरोग्य शरीर का सुख नहीं भोग सकता वह सिद्धों का सुख भी नहीं भोग सकता। द्वादशांग में 12वाँ दृष्टिवाद है, उसके 5 भेदों में से अंतिम पूर्वगत भेद है और उसके 14 भेदों में प्राणावाद नाम का पूर्व है, इसी के अंर्तगत अष्टांग आयुर्वेद का विस्तृत वर्णन मिलता है। हमारे जैनाचार्यों ने अनेक ग्रन्थ शल्य-चिकित्सा एवं काय-चिकित्सा के ऊपर लिखे। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि जैन आचार्य द्वारा रचित **पुष्पायुर्वेद** नामक ग्रन्थ रचा, जिसमें 18,000 पुष्पों का वर्णन है। पुष्पों के माध्यम से शरीर में होने वाली 5,68,99,584 रोगों को दूर करने की विधियाँ इसमें बताई गई हैं।

परमपूज्य एलाचार्यश्री ने जैनधर्म के अध्यात्म रहस्य को बहुत सूक्ष्मता से समझाया कि रोग हमारे शरीर में Passion (कषाय) के कारण होते हैं। चार प्रकार के कषाय के विषय में बताया 1. Anger (क्रोध), 2. Pride (मान), 3. Deceit Full Nature (मायाचारी) और 4. Greed (लोभ)। Anger करने से Brain Haemorrhage, Eye, Hair, Nose, Throat, Mouth आदि के रोग पैदा होते हैं। Pride करने से Heart संबंधी अनेक बीमारियाँ होती हैं। Deceit Full Nature से Stomach, Lever, Kidney आदि में रोगों की उत्पत्ति होती है। Greed करने से Hands-Legs में Paralise आदि की अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। एलाचार्यश्री ने कहा– हम सभी को यदि Illness to Wellness होने के लिए Natural जीवन जीना चाहिए। जैनधर्म Scientific धर्म है, वह जीवन जीने की कला, कब, कैसे, कहाँ क्या खाना, क्या पीना आदि बातों में Science के आधार पर बतलाता है। हम इतना ही कह सकते हैं कि भगवान महावीर स्वामी A Greed Scientist हैं और हमें उन्हीं के बताये हुए धर्म मार्ग पर चलकर अपने मन-वचन-काय को स्वस्थ एवं सुन्दर करना चाहिए। इसी उपलक्ष्य में श्वेताम्बर समाज के परमपूज्यश्री नयपद्मसागरजी महाराज ने भी अपने सारगर्भित व्याख्यान में जैन डॉक्टर्सों को मार्गदर्शन दिया।

सभा में अखिल भारत से पधारे अनेकों सीनियर डॉक्टर्स ने अपने सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किये एवं अनेकों डॉक्टर्सों को इस अवसर पर सम्मानित भी किया गया।

प्रेषक – **हेमचन्द जैन**
अध्यक्ष– श्री दिगम्बर जैन समाज, ऋषभ विहार, दिल्ली-91